रिश्तेदारो और मेहमानो के हुकूक

संपादक- मौलाना जलील अहसन नदवी रह.

राहे अमल हिन्दी.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

नोट: यहां जो हुकूक बयान हुए है उनमे मुस्लिम और गैर मुस्लिम बराबर है.

रिश्तेदारो के हुकूक

१} बुखारी की रिवायत का खुलासा | रावी इबने उमर रदी.

रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया - की वो शख्स जो बदले में रिश्तेदारी का लिहाज़ करता है, वो पूरे दर्ज़े की सिलारहमी करने वाला नहीं है, पूरे दर्ज़े की सिलारहमी ये है की जब दूसरे रिश्तेदार उस्के साथ बेताल्लुकी करे तो ये उन्के साथ अपना संबंध जोडे और उन्का हक दे.

मतलब ये है की रिश्तेदारो के अच्छे सुलूक के जवाब में अच्छा सुलूक करना ये कमाल दर्ज़ा का अच्छा सुलूक नहीं है, सब्से बडा सिलारहमी करने वाला हकीकत में वो शख्स

है की रिश्तेदार तो उस्को काट रहे हो और वो उनसे जुडने की कोशिश करता हो, वो इस्का कोई हक अदा ना करे पर ये उन्के सारे हक अदा करने के लिए तैयार हो, ये एक ऐसी चिझ है जो कमाल दर्ज़ा तकवा के बगैर मुम्किन नहीं है.

२} मुस्लिम की रिवायत का खुलासा | रावी अबू हुरैरा रदी.

एक आदमी ने रसूलुल्लाहﷺ से कहा की ए अल्लाह के रसूल! मेरे कुछ रिश्तेदार है जिन्के हक में अदा करता हूँ और वो मेरे हक अदा नहीं करते है में उन्के साथ अच्छा सुलूक करता हूँ और वो मेरे साथ बुरा सुलूक करते है, में उन्के साथ हिल्म व नर्मदिली से पेश आता हूँ और वो मेरे साथ जिहालत से पेश आते है.

आपﷺ ने फरमाया- अगर तू ऐसा ही है जैसा की तू कहता है तो गोया तू उन्के चेहरो पर सियाही फेर रहा है और अल्लाह उन्के मुकाबले में हमेशा तेरा मददगार रहेगा जब तक तू इस हालत पर कायम रहेगा.

मेहमानो के हुकूक

१} बुखारी व मुस्लिम की रिवायत का खुलासा | रावी खुवैलिद बिन अमर रदी.

रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया - की जो लोग अल्लाह और आखिरत के दिन पर ईमान रखते है तो उन्हें चाहिए की अपने मेहमान की आव भगत करे, पहला दिन इनाम का दिन है जिस में मेहमान को अच्छे से अच्छा खाना खिलाना चाहिए और मेहमानी तीन दिन तक है.

दूसरे और तीसरे दिन उस्की मेहमानी में तकल्लुफ करना अखलाकी तौर पर जरूरी नहीं उस्के बाद जो कुछ भी वो करेगा उस्के लिए सदका होगा और मेहमान के लिए जाईज नहीं है की अपने मेज़बान के साथ ठहरा रहे यहां तक की उस्को तंगी और परेशानी में डाल दे.

इस हदीस में मेज़बान और मेहमान दोनो को हिदायत दी गई है.

यानी मेज़बान को इस बातकी की वो अपने मेहमान की आव भगत करे, आवभगत का मतलब सिर्फ खिला पिला

देना नहीं है बल्की हंस कर बोलना, खुशी से पेश आना ये सभी कुछ मुराद है और मेहमान को ये हिदायत दी गई की जब किसी के यहां मेहमान बनकर जाए तो वहीं धरना मार कर बैठ ना जाए की उस्से मेज़बान परेशान हो जाए.

'मुस्लिम' की एक रिवायत इस हदीस की अच्छी तरह व्याख्या करती है जिस में रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया की किसी मुसलमान के लिए जाईज नहीं है की वो अपने भाई के पास ठहरे यहां तक की उसे परेशानी में डाल दे.

लोगों ने पूछा की ए अल्लाह के रसूल! वो किस तरह उस्को परेशानी में डाल देगा? तो आपﷺ ने फरमाया इस तरह की ये वहीं उस्के पास ठहरा रहे और उस्के पास मेज़बानी के लिए कुछ ना हो.